34.0 गावो विश्वस्य मातरः

- **डॉ0 सन्दीप कुमार मिश्र**, सहायकाचार्य,संस्कृत विभाग, किसान स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बहराइच
  Email: contactsandeepmishra@gmail.com
- **डॉ0 शोभा शुक्ला**, असि0 प्रोफेसरसंहिता- , एन्क्राइट आयुर्वेदिक मेडिकल कालेज एण्ड हास्पिटल, लखनऊ
  Email: contactshobha2410@gmail.com

शोध-सार

गो भारत की राष्ट्रिय समृद्धि और सम्पदा की विशिष्ट प्रतीक रही हैं। यह हमारी आर्ष परम्परा की महत्त्वपूर्ण अंग थी। जिसके तपोवन में गोसंख्या जितनी विशाल होती थी वह उतना ही समृद्ध समझा जाता था। भारतीय संस्कृति की दृष्टि से गो का - महत्त्व तो गायत्री और गंगा से भी बढ़कर है। वेदों मे गो की महिमा बड़ेबड़े सुन्दर रूपकों तथा उपमानो मे गायी गयी है। अथर्ववेद - -मे कहा गया है 'विश्वरूपा धेनुः कामदुघा मेऽस्तु'[1] अर्थात् कर्मफल के रूप में मुझे समस्त फल देने वाली एवं कामनाएँ पूर्ण करने वाली धेनु प्राप्त हो। जिसका अर्थ हुआ कि अनादि काल से ही गो हमारे लिए पूजनीय एवं अभिनन्दनीय रही है। भारतीय संस्कृति कर्म प्रधान है। यज्ञ भी कर्म का ही एक रूप है। जिस प्रकार यज्ञचक्र गो के बिना सम्भव नहीं है उसी प्रकार कर्मचक्र को भी सुखद एवं अनुकूल बनाने के लिए गो की आवश्यकता है। श्रीमद्भगवद्गीता में सृष्टिचक्र को यज्ञ में ही प्रतिष्ठित बताते हुए कहा गया है- 'तस्मात्सर्वगतं ब्रह्म नित्यं यो प्रतिष्ठितम्'[2]। यज्ञ के बिना जीवन को सर्वथा निरर्थक माना गया है। विश्वकल्याण का प्रमुख साधन यज्ञ है और गो उस यज्ञ का मुख्यतम अंग है। गो से प्राप्त होने वाला पंचगव्य जितना उपयोगी यज्ञ में है उतनी ही मानवजीवन में भी - रक्षा का प्रश्न एक विचारणीय प्रश्न है। गो हमारी द-उसकी उपयोगिता है। आज गो◌ृष्टि में केवल पशु ही नही अपितु पृथ्वी का भी प्रतीक है। महर्षि यास्क ने अपने निघण्टु ग्रन्थ का आरम्भ 'गो' शब्द से ही किया है। गर्भाधान संस्कार से लेकर दाहसंस्कार तक - ऐसा कोई संस्कार नहीं जिसमे गो की आवश्यकता न पड़ती हो। भारत ने गो की महिमा आज से ही नहीं अपितु अनादिकाल से समझा है। इस प्रकार यदि देखा जाय तो भारतीय संस्कृति का मेरु गोसंस्कृति ही है। इसीलिए वेदों-, उपनिषदों पुराणों,रामायण और महाभारत आदि सभी आर्षग्रन्थों में सर्वत्र गो की महिमा का विशद् वर्णन मिलता है। प्रस्तुत लेख में वेदों, पुराणों, आर्षकाव्यों आदि में वर्णित गो महिमा, तथा आधुनिक समय में उसकी उपयोगिता पर दृष्टि डालने का प्रयास किया गया है।

कुंजी शब्द *-गोसंस्कृति-, सृष्टिचक्र में गो की उपयोगिता, देश की विविध समृद्धि का हेतु एवं प्रासंगिकता।*

महाभारत के अनुसार स्वयम्भू ब्रह्मा ने जब लोकसृष्टि की कामना की, तब उन्होने समस्त प्राणियों की जीवनवृत्ति के लिए सर्वप्रथम गो की ही सृष्टि की थी-

लोकान् सिसृक्षुणा पूर्वं गावः सृष्टाः स्वयम्भुवा।
वृत्यर्थं सर्वभूतानां तस्मात् ता मातरः स्मृताः।।[3]

प्राचीन युगों मे भारत में जो विबुध विस्मयकारी वैभव विद्यमान होने-की विशद चर्चा पुराणेतिहासों में मिलती है उसका मूल गौएँ ही थी। यहाँ के ऋषिमुनियों का जीवन निर्वाह-, धार्मिक क्रियाकलाप एवं विविध प्रकार की विद्याएँ गौओं पर ही निर्भर थी। इस - -सम्बन्ध में वाल्मीकि रामायण का यह श्लोक द्रष्टव्य है

शाश्वती शबला मह्यं कीर्तिरात्मवतो यथा।
अस्यां हव्यं च कव्यं च प्राणयात्रा तथैव च।।
आयत्तमग्निहोत्रं च बलिर्होमस्तथैव च।
स्वाहाकारवषट्कारौ विद्याश्च विविधास्तथा।।[4]

अर्थात् आत्मवान् पुरुष की अक्षयकीर्ति के समान सदा मेरे साथ सम्बन्ध रखने वाली यह चितकबरी गौ मुझसे पृथक् नहीं हो सकती। मेरा हव्यकव्य और जीवन निर्वाह इसी पर निर्भर है। मेरा अग्निहोत्र-, बलि, होम, स्वाहाभाँति की -वषट्कार और भाँति- विद्याएँ इसी के अधीन हैं।

भगवान् वेदव्यास का साहित्य 'व्यासोच्छिष्टं जगत्सर्वम्' की परम्परा से प्रसिद्ध है। इन्होनें अपने समग्र साहित्य में गो सेवा को-प्रमुख माना है और उसे यज्ञ, तप, दान, धर्म आदि सभी का मूल कहा है। भगवान् वेदव्यास ने वेद और यज्ञ को संसार की रक्षा के दो मुख्य उपाय माने हैं। यज्ञानुष्ठान मनुष्यमात्र का परम कर्तव्य है। जब तक भारत में यज्ञयागादि द्वारा देवताओं की आराधना होती थी तब - तक यह देश सुखी एवं समृद्ध था, सारी ऋतुएँ अपने समय से गमन करती रहती थी। बाढ़, भूकम्प, सूखा, महामारी आदि दैवीय आपदाओं से यह देश मुक्त था, किन्तु शनैः शनैः यज्ञयागादि के लोप होने पर ही वर्तमान भीषण आपदाओं का सामना करना पड़ - रहा है। वेदव्यास के अनुसार गायों से सात्विक वातावरण का निर्माण होता है। गायें अत्यन्त पवित्र हैं इसलिए जहाँ रहती हैं वहाँ कोई भी दूषित तत्त्व नहीं रहता। उनके शरीर से दिव्य सुगन्धित वायु प्रवाहित होती रहती है। देवता और मनुष्य सबको भोजन देने वाली गौएँ ही हैं। इनसे सब प्रकार का कल्याण होता है। गो का ऐसा ही महत्त्व महाभारत के अनुशासनपर्व में महर्षि च्यवन और नहुष के संवाद में दृष्टिगोचर होता है-

गावो लक्ष्म्याः सदा मूलं गोषु पाप्मा न विद्यते।
अन्नमेव सदा गावो देवानां परमं हविः।।
तेजसा वपुषा चैव गावो वह्निसमा भुविः।
गावो हि सुमहत्तेजः प्राणिनां च सुखप्रदाः।।
इत्येतद् गोषु मे प्रोक्तं महात्म्यं भरतर्षभ।
गुणैकदेशवचनं शक्यं पारायणं न तु।।[5]

महर्षि च्यवन नहुष से कहते हैं कि गायें लक्ष्मी की मूल हैं, उनमें पाप का लेश भी नहीं है। वे मनुष्यों को अन्न तथा देवताओं को उत्तम हवि देती हैं। इस पृथिवी पर गायें अपने तेज और शरीर में अग्नि के समान हैं। वे महान् तेजोमयी और समस्त प्राणियों को सुख देने वाली हैं। आगे महर्षि च्यवन कहते हैं कि उन्होनें तो गुणों के केवल एक अंश का ही वर्णन किया है। गो के सम्पूर्ण गुणों का वर्णन करने में तो कोई समर्थ ही नहीं है।

इस प्रकार वेदों, पुराणों, गीता, रामायण, महाभारत आदि सभी प्राचीन ग्रन्थों में गो की महिमा सर्वत्र वर्णित है। लौकिक रचनाकार यथा कालिदास आदि ने भी अपने काव्यों मे गो की महिमा का भावपूर्ण वर्णन किया है। उन्होनें अपने महाकाव्य रघुवंश मे दिलीप की गो सेवा का जो मार्मिक दृश्य प्रस्तुत किया है वह लौकिक काव्यों मे अन्यत्र दुर्लभ है। दिलीप की पुत्र प्राप्ति की इच्छा को देखते हुए जब वशिष्ठ तपोबल से सन्तान के प्रतिबन्ध का कारण देखते हैं तो उन्हें ज्ञात होता है कि ऐसा कामधेनु के अनादर के कारण ही है। कहा भी गया है कि पूजनीय की पूजा का उल्लंघन कल्याण को रोक देता हैप्रतिबध्नाति हि श्रेयः पूज्य पूजा व्यतिक्रमः।-[6] अतः गोतत्व वेत्ता होने के कारण वशिष्ठ ने दिलीप को नन्दिनी की भक्ति और सेवा करने को कहा क्योंकि वह जानते थे कि-

गोषु भक्तश्च लभते यद् यदिच्छति मानवः।
स्त्रियोऽपि भक्ताः या शेषु ताश्च काममवारनुयुः।
पुत्रार्थी लभते पुत्रं कन्यार्थी तामवारनुयात्।।
धनार्थी लभते वित्तं धर्मार्थी धर्ममानुयात्।[7]

महाकवि कालिदास ने नन्दिनी गाय की रक्षा हेतु दिलीप द्वारा सिंह के सामने स्वयं को भोजन रूप में प्रस्तुत कराकर समाज को यह सन्देश दिया है कि गो सभी परिस्थितियों मे रक्षणीय है।

श्रीरामचरितमानस में गोस्वामी तुलसीदास ने भी गो की जिस महिमा का वर्णन किया है वह वेदों तथा पुराणों से ही अनुप्राणित है। भगवान के भूतल पर आने का करण वह गोरक्षा, ब्राह्मणरक्षा और धर्म रक्षा को मानते हैं-

बिप्र धेनु सुर संत हित लीन्ह मनुज अवतार।
निज इच्छा निर्मित तनु माया गुन गो पार।।[8]

महाभारत में गाय को भूमि तथा सरस्वती के तुल्य कहा गया है और इन तीनों का दान करने से मनुष्य को मिलने वाला फल भी समान ही होता है। इन तीनों के दान से मनुष्य की सभी कामनाएँ पूर्ण होती है-

तुल्यनामानि देयानि त्रीणि तुल्यफलानि च।
सर्वकामफलानीह गावः पृथ्वी सरस्वती।।
यो ब्रूयाच्चापि शिष्याय धर्म्यां ब्राह्मी सरस्वतीम्।
पृथिवीगोप्रदानाभ्यां तुल्यं स फलमश्नुते।।[9]

निरुक्तकार ने गो का निर्वचन करते हुए कहा है-'गौरिति पृथिव्या नामधेयम्', 'आदित्योऽपि गौरुच्यते', 'सुषुम्णः सूर्यरश्मिश्चन्द्रमा गन्धर्वः' सोऽपि गौःउच्यते'।[10] इस प्रकार यास्क ने पृथ्वी, सूर्य, चन्द्र, किरण आदि 24 अर्थों में गो का निवर्चन किया है। 'पृथ्वी' सच्चिदानन्दस्वरूप परमेश्वर की सत्प्रधान अभिव्यक्ति है। 'सूर्य' उसकी चित्प्रधान अभिव्यक्ति है तथा 'चन्द्र' को ईश्वर की आनन्दप्रधान अभिव्यक्ति माना जा सकता है। गो में परमेश्वर की त्रिविध शक्तियों का सन्निवेश है। गौ स्वर्ग की सोपान कही गयी है एवं स्वर्ग में भी पूजनीय हैगावः स्वर्गस्य सोपानं गावः स्वर्गेऽपि पूजिताः।-[11] इस प्रकार यदि हम अपनी आर्ष परम्परा पर दृष्टिपात करें तो देखते हैं कि हमारी भारतीय संस्कृति में गो का सर्वाधिक महत्त्व है इसीलिए हमारे आर्षग्रन्थ गोमहिमा के वर्णन से भरे पड़े हैं।

आर्थिक, सामाजिक, पर्यावरणीय एवं चिकित्सकीय समृद्धि का हेतु

गो हमारे जीवन की न केवल सांस्कृतिक उन्नति का मूल हेतु है अपितु वह आर्थिक तथा सामाजिक उन्नति का भी मूल हेतु कही गयी है। महाभारत के अनुसार गाय के तुल्य कोई भी धन नहीं है-'गोभिस्तुल्यं न पश्यामि धनं किंचिदिहाच्युत'[12]। हमारा देश कृषि प्रधान देश है तथा यह कहा जाता है कि लगभग 70 प्रतिशत लोगों की आजीविका का मूल साधन खेती ही है। जब विश्व में भारत को सोने की चिड़िया कहा जाता था उस समय गोवंश का संरक्षण,संवर्धन तथा उसकी पूजा होती थी। भारतीय संस्कृति की चार आधारशिलाओंगो-, गंगा, गीता और गायत्री में भी गो को प्रथम स्थान प्राप्त है। अतः यह निश्चित है कि इस अमूल्य धरोहर का जितना विकास होगा, हमारे देश का भी उतना ही विकास होगा। कृषि के विकास में गोवंश का महत्त्वपूर्ण योगदान है। पंजाब प्रान्त में किये गये एक शोध के अनुसार किसानों के लिए डेयरी उद्योग अन्न उत्पादन की अपेक्षा अधिक लाभप्रद है। गोवंश ऊर्जा का एक अनन्त स्रोत हो सकता है। एक अनुमान के अनुसार आने वाले 20-25 वर्षों में पेट्रोल,डीजल आदि समाप्त होने की कगार पर होंगें, जिससें पेट्रोलियम ऊर्जा का संकट हमारे सामने खड़ा हो सकता है, किन्तु हम यदि गोवंश का संरक्षण कर ले और गाँवों में खेतों की जुताई, पेराई तथा सामानों की ढुलाई में ट्रैक्टर ट्राली की जगह बैलगाड़ी का प्रयोग करने लगे तो पेट्रोलियम पदार्थों पर हमारी निर्भरता काफी हद तक समाप्त हो जायेगी और हम पेट्रोलियम ऊर्जा की बचत कर सकते हैं। पुराणों में अनेक स्थानों पर गाय के गोबर में लक्ष्मी का निवास बताया गया है-'लक्ष्मीश्च गोमये नित्यं पवित्रा सर्वमंगला'[13]। इसका तात्पर्य यह हुआ कि गोमय में ही समस्त धनसम्पदा समाहित है। जबसे भारतीयों ने आधुनिकता की दौड़ में गोवंश का संरक्षण करना बन्द कर दिया है और इनके - द्वारा खेती करने की जगह यान्त्रिक खेती, गोमय की खाद के स्थान पर रासायनिक उर्वरकों, खादों, कीटनाशक जहरीली औषधियों का उपयोग शुरु किया है तभी से मानव स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव दिखने लगा है। यदि हम ध्यान से देखें तो पता चलता है कि जो पौष्टिकता एवं स्वादिष्ट अन्न हमें गोमय के प्रयोग से मिलता था वह इस आधुनिक खेती से नहीं मिलता है अपितु इस प्रकार की खेती से पृथ्वी और मानव दोनों को ही हानि उठानी पड़ रही है। गोबर गैस संयत्र से बायोगैस-,बिजली तथा खाद बनाकर अरबों रुपयों की बचत की जा सकती है। गोबर की उपलब्धता के आधार पर छोटेयत्र से बड़े गोबर गैस संयत्र लगाये जा सकते हैं। इस सं- गैस प्राप्त की जा सक-उपयोग हेतु गोबरती है। इनसे बिजली के बल्ब जैसा प्रकाश भी प्राप्त कर सकते हैं। गोबर के कण्डे तथा ईधन के उपयोग से भी आर्थिक समृद्धि प्राप्त की जा सकती है। कोयले की अपेक्षा इनसे निकलने वाला धुँआ प्रदूषणकारी भी नहीं होता है। इनकी जगह कोयले अथवा लकड़ी अथवा एल0पी0जी0 गैस आदि के उपयोग से अरबों रुपये के मूल्य की हानि होती है। अतः गोमय के प्रयोग से हम इन अरबों रुपयों की होने वाली हानि तथा पर्यावरण को बचाकर राष्ट्र की समृद्धि में अपना योगदान दे सकते हैं। इसके अतिरिक्त गोबर से साबुन, अगरबत्ती, शीतताप अवरोधक प्लास्टर आदि का उत्पादन कर-के भी हम आर्थिक समृद्धि प्राप्त कर सकते हैं। वर्तमान समय में बहुत से लोग इस तरह के उद्योगों से जुड़कर अपनी आजीविका का सम्यक् निर्वहन कर रहे हैं।

आयुर्वेद में भी गो की महत्ता अनेक स्थानों पर वर्णित है। आयुर्वेद के अनुसार गोदुग्ध के समान कोई दूसरा पौष्टिक पदार्थ नहीं है। आज भी यह देखा जाता है कि जन्म होने पर यदि बच्चा माता का दुग्ध नहीं पी पाता तो चिकित्सक उसे गोदुग्ध पिलाने की सलाह

देते है। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त गोदुग्ध का इसके औषधीय गुणों के कारण कहीं भी निषेध नहीं किया गया है। चरकसंहिता गोदुग्ध को जीवनी-शक्तियों में सर्वश्रेष्ठ रसायन कहती है-'प्रवरं जीवनीयानां क्षीरमुक्तं रसायनम्'[14]। भावप्रकाश के अनुसार गोदधि सभी प्रकार के दहियों में अधिक गुणकारक एवं पौष्टिक है-'उक्तं दध्नामशेषाणां मध्ये गव्यं गुणाधिकम्'[15]। यह अग्नि को प्रदीप्त करने वाला तथा बल एवं शुक्र को बढ़ाने वाला है।[16] गोमूत्र कटु, तीक्ष्ण एवं उष्ण होता है तथा क्षारयुक्त होने से यह वातवर्धक नहीं होता। सम्यक् रूप से गोमूत्र सेवन से कुष्ठादि चर्मरोग नष्ट हो जाते है। आयुर्वेद में जहाँ भी मूत्र शब्द का प्रयोग है वहाँ गोमूत्र का ही ग्रहण है। श्रीमद्भागवत् के अनुसार राम वनवास के समय अन्न के साथ गोमूत्र का सेवन करने से ही आध्यात्मिक उन्नति करते रहे-'गोमूत्रयावकं श्रुत्वा भ्रातरं वल्कलाम्बरम्'[17]। शार्ङ्धर संहिता के अनुसार अजमोदादि चूर्ण अजमोदा), मोचरस, शुण्ठी, धाय पुष्प इन चारों का चूर्णको गोदधि में अच्छी तरह से फेंटकर सेवन करने से वह गग की धारा के (यह वृष्य समान प्रवाहित अतिसार को भी रोकने में समर्थ है। इसी प्रकार गोघृत नेत्रों के लिए अत्यन्त उपयोगी है।, अग्निदीपक, रस एवं विपाक में मधुर, शीत तथा तीनों दोषों का शामक है तथा मेधा,लावण्य,कान्ति,ओज तथा तेज की वृद्धि करने वाला है। गोघृत गुरु, बलवर्धक, आयुवर्धक तथा सब घृतों में सर्वाधिक बलवान है।[18] पंचकोलादि घृत जिसे षट्पल घृत भी कहते हैं वह गुल्म ज्वर, उदर रोग, श्वासकास-, मन्दाग्नि, शोथ एवं उद्गार को नष्ट करता है।[19] इस प्रकार यह स्पष्ट है कि गोदुग्ध, गोदधि, गोमय, गोमूत्र आदि गो से प्राप्त होने वाले सभी पदार्थ स्वास्थ्य के लिए किसी न किसी रूप में हितकर है। अतः स्वास्थ्य की दृष्टि से भी गोवंश का पालन एवं संरक्षण वर्तमान समय में भी अत्यन्त आवश्यक है।

वर्तमान समय में गो की प्रासंगिकता

कृषि, भारत की समृद्धि की रीढ़ है और कृषि की रीढ़ हैगोवंश। किन्तु भौतिकतावादी युग में मानव इस बात को भूलता जा रहा है। - होना। ज्ञान के अभाव में तथा समाज में आगे निकलने की होड़ में हम अपनी संस्कृति एवं संस्कृत से विरत-भूलने का मूल कारण है गोवंश से प्राप्त होने वाले लाभों को या तो जान नहीं पा रहे हैं अथवा जानकर भी अनसुनाअनदेखा कर रहे हैं। यद्यपि हम लगातार - तो हम देखते हैं कि रासायनिक खादों के निरन्तर इसका परिणाम भी भुगत रहें हैं। यदि खेतों में प्रयोग होने वाली खाद को ही लें प्रयोग से भूमि की उर्वराशक्ति लगातार कम होती जा रही है तथा उपजा हुआ अन्न भी जहरीला और दूषित होता जा रहा है, जो हमारे स्वास्थ्य को बुरी तरह से प्रभावित कर रहा है। पौधों को एक यूनिट नाइट्रोजन के स्थान पर 50 यूनिट कार्बन की आवश्यकता है। रासायनिक खाद की अपेक्षा सेन्द्रिय खाद के उपयोग से दो गुना से भी अधिक कार्बन प्राप्त होता है। यदि ठीक पद्धति से कम्पोस्ट खाद तैयार की जाय तो विदेशों से खाद के आयात की समस्या हल हो सकती है जिससे विदेशी मुद्रा की बचत होगी। यदि गोबर गैस प्लांट की योजना बड़े पैमाने पर लागू की जाय तो पेट्रोलियम पदार्थों के आयात की समस्या को हल किया जा सकता है। इस योजना के सफल होने पर देश के धन की बचत तो होगी ही, साथ ही रोजगार के अवसर भी उपलब्ध होंगें। वर्तमान में मनुष्य के लिए उसका स्वास्थ्य सबसे बड़ी समस्या के रूप में उभरा है। आज लगभग प्रत्येक मनुष्य किसी न किसी व्याधि से पीड़ित है किन्तु धन प्राप्ति के अंधी होड़ में उसने स्वयं को दाँव पर लगा दिया है। इ संसार के प्राणियों का जीवन अन्न पर ही निर्भर है। वह अन्न दुग्धान्न अथवा कृष्यन्न किसी भी रूप में हो सकता है। जिस मण्डल से दुग्धान्न का प्रादुर्भाव होता है उसे पशुचक्र कहते हैं तथा जिससे कृष्यन्न उत्पन्न होता है उसे कृषिचक्र कहते हैं। पशुचक्र से प्राप्त होने वाले लाभ गोरक्षा पर निर्भर है तथा कृषिचक्र से प्राप्त होने वाले लाभ कृषि के विकास पर निर्भर हैं। ये दोनों ही चक्र सदैव एकदूसरे को शक्ति पहुँचाते हुए सर्वांगीण विकास में - योगदान देते हैं। पशुचक्र से दूध,चमड़े,खाद आदि के व्यापार से आर्थिक उन्नति की जा सकती है तथा कृषि चक्र से फलफूल-, धान, गेहूँ , तिलहन आदि विविध अन्नों के व्यापार, सागन्ना आदि से चीनीसब्जी आदि के व्यापार तथा ग-,गुड़ आदि के कारखानों के द्वारा स्वयं तथा देश की आर्थिक उन्नति की जा सकती है तथा कृषि एवं पशुचक्र पर निर्भरता से प्रकृति एवं स्वास्थ्य दोनों का ही लाभ किया जा सकता है।

निष्कर्ष-

शास्त्रों में धर्म का आधिदैविक स्वरूप वृषभ को बताया गया है। इस दृष्टि से गो धर्म की जननी हैं। धर्म का प्रधान साधन है स्वस्थ एवं नीरोगी शरीर-'शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्'[20]। यहाँ धर्म शब्द एक उपलक्षण मात्र है वस्तुतः सभी पुरुषार्थों की प्राप्ति

शरीर से ही साध्य है। गोमाता इस जगत् को स्वस्थ बनाकर पुरुषार्थ सिद्धि की प्राप्ति में सहायक है। स्वयं भगवान कृष्ण, इन्द्र की पूजा के स्थान पर गाय की पूजा पर बल देते हैं। इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि गोसेवा से अर्थ और काम - साथ दुर्लभ धर्म की प्राप्ति भी सिद्ध होती है। यह धर्म जब निष्कामभाव-की प्राप्ति के साथ से युक्त तथा आसक्ति, फलेच्छा और अहमन्यता से मुक्त होता है तो वही मोक्ष की प्राप्ति करा देता है। अतः स्पष्ट है कि गोसेवा वेदशास्त्रानुमोदित सर्वोत्कृष्ट दिव्य कर्म है जो पुरुषार्थचतुष्टय की प्राप्ति कराने में समर्थ है। इसीलिए सब प्रकार से समर्थ होने कारण वेदों में गाय को विश्व की माता गया है- 'गावो विश्वस्य मातरः' तथा महाभारत आदि ग्रन्थों में भी 'मातरः सर्वभूतानां गावः'[21] कहकर गो की स्तुति की गयी है।

सन्दर्भ-

अथर्ववेदः-काण्ड-4/34/8 -
श्रीमद्भगवद्गीता-3/15, गीता प्रेस गोरखपुर
महाभारतअनु -0पर्व 145, गीता प्रेस गोरखपुर
वाल्मीकि रामायण -1/53/13.14 , गीता प्रेस गोरखपुर
महाभारतअनु -0 पर्व 51/28-29, गीता प्रेस गोरखपुर
रघुवंशम्-1/79 त्रिपाठी कृष्णमणि, चौखम्भा विद्याभवन वाराणसी
महाभारतअनु -0पर्व 83/50-52 , गीता प्रेस गोरखपुर
श्रीरामचरितमानस/बालकाण्ड-192, गीता प्रेस गोरखपुर
महाभारतअनु -0पर्व 69/4, गीता प्रेस गोरखपुर
निरुक्त-2/6 पृ0 44, प्रो0 ऋषि, उमाशंकर शर्मा, चौखम्भा विद्याभवन वाराणसी सं0 2001
महाभारतअनु-0पर्व 51/33, गीता प्रेस गोरखपुर
तदेव 51/26
स्कन्दपुराण-रेवाखण्ड-83.108, गीता प्रेस गोरखपुर
चरक संहिता/गोरसवर्ग-अन्पानविध्यध्याय/सूत्रस्थानम्-218 आचार्य शुक्ल, विद्याधर, चौखम्भा विद्याभवन वाराणसी
भावप्रकाश-दधि वर्ग/द्वितीय भाग-पूर्व खण्ड-4 डा0 मिश्र, सत्येन्द्र,चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी
तदेव-दधि वर्ग- 3 डा0 मिश्र, सत्येन्द्र,चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी
श्रीमद्भागवत् -9/10/34 गीताप्रेस गोरखपुर
भावप्रकाश-घृत वर्ग/द्वितीय भाग-पूर्व खण्ड-2, डा0 मिश्र, सत्येन्द्र,चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी
अष्टाङ् हृदयराजयक्ष्मादि चिकित्सा-, डॉ त्रिपाठी, ब्रह्मानन्द, चौखम्भा संस्कृत प्रतिष्ठान, वाराणसी
कुमारसम्भवम्-5/33, त्रिपाठी कृष्णमणि, चौखम्भा विद्याभवन वाराणसी
महाभारतअनु-0पर्व 69/07,गीताप्रेस गोरखपुर